शोध मंथन Vol. XVII No.2 Apr.- June. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *https://anubooks.com/journal-volume/shodhmanthan-vol-xvii-june-2026-no2*

ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति समाज का दृष्टिकोण एवं सामाजिक बहिष्करण एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्राप्तिः 04.05.2026
स्वीकृतः 16.06.2026

38

लवप्रीत कौर
शोधकर्ता (समाजशास्त्र विभाग)
गोकुल दास हिंदू गर्ल्स कॉलेज,
मुरादाबाद
ईमेलः *lovepreetlovely9917@gmail.com*

प्रो (डॉ) अंचल गुप्ता
(समाजशास्त्र विभाग)
गोकुल दास हिंदू गर्ल्स कॉलेज
मुरादाबाद

सारांश

भारतीय सामाजिक परिपेक्ष्य में ट्रांसजेंडर समुदाय ऐतिहासिक रूप से मौजूद होने के उपरांत भी सामाजिक उपेक्षा, भेदभाव और पहचान संकट का सामना करता रहा है। उल्लेखित शोध पत्र ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति, लैंगिक पहचान, सांस्कृतिक स्वीकृति तथा सामाजिक व्यवस्था में उनके समावेशन की प्रणाली का समाजशास्त्रीय विवेचन करता है। साथ ही अवलोकन के दौरान में यह भी पाया गया कि ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को संस्थागत सुविधाओ एवं सरकारी योजनाओं तक पहुँच बनाने में विभिन्न प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यह शोध पत्र नीतिगत सुधार एवं प्रयोग की आवश्यकता पर भी बल देता है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य शिक्षा, रोजगार, पारिवारिक मान्यताये से जुड़ी चुनौतियों को समझना है। इसके साथ ही प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक एवं सवेधानिक व्यवस्थाये बदलती सामाजिक मानसिकता के प्रभावों का मूल्यांकन भी किया गया है। इसके अंतर्गत ट्रांसजेंडर समुदाय के सशक्तिकरण, समान अवसर और सामाजिक न्याय की संभावनाओं को रेखांकित किया गया है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज की संरचना परंपरागत रूप से पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर आधारित रही है, जिसके अंतर्गत पुरुष और महिला की भूमिकाएँ सामाजिक रूप से निर्धारित मानी जाती हैं। लैंगिक विभाजन केवल जैविक अंतर तक सीमित न होकर सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों से भी प्रभावित होता है। सामान्यतः पुरुष को सार्वजनिक क्षेत्र और महिला को घरेलू भूमिकाओं से जोड़ा गया है। आधुनिक समाज में LGBTQ समुदाय की पहचान महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में उभरकर सामने आई है। यह समुदाय उन व्यक्तियों को सम्मिलित करता, जिनकी लेंगिक पहचान और यौन अभिरुचि परंपरिक मानदंडो से भिन्न होती है। ’LGBTQ शब्द से आशय, Lasbian,Gay,Bisexual,Transgener तथा Queer समुदाय से है। Lasbian वे महिलाये होती है, जो महिलाओ के ओर आकर्षित होती। Gay वे पुरुष होते है जो पुरुष की ओर आकर्षित होते है तथा Bisexual वे व्यक्ति होते है जो पुरुष

और महिला दोनों की ओर आकर्षित होते है Transgender वे व्यक्ति होते है जिनकी लेंगिक पहचान जन्म के समय निर्धारित लिंग से भिन्न होती है जबकि Queer की लेंगिक या यौन पहचान पारंपरिक धारणाओं से कम होगी। वर्तमान समय में LGBTQ को क़ानूनी रूप से पहचान प्राप्त हो चुकी है, जबकि सामाजिक स्तर पर पूरी तरह से स्वीकृति नही मिली है इन दोनों के अतिरिक्त तीसरे लिंग अर्थात् ट्रांसजेंडर समुदाय को भी सामाजिक एवं कानूनी पहचान प्राप्त हुई है। परन्तु इसके बावजूद समाज में उनके प्रति पूर्ण स्वीकृति अभी विकसित होने की प्रक्रिया में है, जिससे उनके सामाजिक अनुभवों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। लैंगिक पहचान मनुष्य के व्यक्तित्व और सामाजिक पहचान का एक महत्वपूर्ण आधार है। सामान्यतः समाज लैंगिक अस्तित्व को केवल पुरुष और स्त्री के स्वाभाविक रूप में समझता है, किंतु वास्तविकता इससे अपेक्षाकृत अधिक व्यापक है। ट्रांसजेंडर वे इन्सान होते हैं जिनकी लैंगिक पहचान जन्म के समय निश्चित जैविक लिंग से अलग होती है। ट्रांसजेंडर व्यक्ति जन्म से ही शारीरिक अथवा जैविक रूप से भिन्न होते हैं, उनकी यह पहचान भावनात्मक मानसिक, और सामाजिक स्तर पर होती है। यह कोई बीमारी, विकार या असामान्यता नहीं, बल्कि लैंगिकता का स्वाभाविक रूप है। पुराने समय से ही ट्रांसजेंडर समुदाय का अस्तित्व रहा है। सांस्कृतिक एवं धार्मिक पुराणों में इनके उलेल्ख मिलते हैं। जैसे महाभारत में अर्जुन ने अज्ञातवास के दौरान बृहन्नला के रूप धारण किया और स्त्रियों के बीच रहकर नृत्य–संगीतं सिखाया । प्राचीन समय में राजमहल में रानियों की सुरक्षा के लिए ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को रखा जाता था क्योकि इन्हें भरोसेमंद समझा जाता था। महल की देख रेख की जिम्मेदारी इन्हे सोंपी जाती थी। परन्तु कहने की आवश्यकता नहीं है अभी भी समाज में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त नहीं हो पाई । लैंगिक विविधता के कारण शिक्षा, परिवार, स्वास्थ्य सेवाओं तक सिमित पहुँच एव रोजगार के क्षेत्र में अभाव आदि से ट्रांसजेंडर व्यक्तियो के प्रति समाज का नकारात्मक द्रष्टिकोण और भेदभाव देखा गया है। इसी सामाजिक दृष्टिकोण के कारण ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को परिवार, शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। यह सामाजिक अस्वीकृति उन्हें समाज की मुख्यधारा से अलग कर देती है, जिसे सामाजिक बहिष्करण कहा जाता है। यही स्थिति ट्रांसजेंडर के साथ किया गया मतभेद समाज तथा सरकार द्वारा प्रदान सुविधाओ से वंचित भी रखती है, जो सामाजिक बहिष्करण को दर्शाता है। सामाजिक बहिष्करण न केवल उनके आत्मसम्मान और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि उनके सामाजिक और आर्थिक विकास में भी गंभीर बाधा उत्पन्न करता है। वर्तमान समय में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को अस्तित्व की पहचान और क़ानूनी अधिकार प्राप्त होने के बाद भी समाज में उनके प्रति सकारात्मक का अभाव बना हुआ है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की पहचान, जीवन की स्थिति तथा उनके प्रति समाजिक बहिष्करण का गहन विश्लेषण किया जाये, ताकि उनके सम्मान और जीवन के समान अवसरों के निर्माण के लिए सरकार तथा समाज द्वारा सार्थक प्रयास किया जा सके।

यदापि इस क्षेत्र में शोध, शोध पत्र तथा साहित्य का प्रायः अभाव ही है, परन्तु इस शोध में लिखने के पूर्व पुस्तकों का अध्ययन किया है, उनमे से कुछ के अंश यहाँ प्रस्तुत कर रही हू।

साहित्य सर्वेक्षण

1. रामलाल सुमन (2014) "तीसरी दुनिया किन्नर समाज" यह पुस्तक ट्रांसजेंडर समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक पक्षों का विस्तृत वर्णन करती है। इसमें दर्शाया गया है कि पारंपरिक दृष्टिकोण में किन्नर समाज को ''तीसरे लिंग'' के रूप में अलग पहचान दी जाती है, जिसके कारण वे समाज की मुख्यधारा से प्रायः अलग पड़ जाते हैं। जो किन्नर समुदाय के हाशियाकरण को स्पष्ट करता है।
2. लवलेश दत्त (2023) ''ट्रासजेंडरः दर्द की दास्तान'' यह पुस्तक ट्रांसजेंडर समुदाय के मानसिक भावनात्मक, और सामाजिक संघर्षों को प्रदर्शित करती है। लेखक ने ट्रांसजेंडर की पारिवारिक अस्वीकृति, सामाजिक घृणा और मानसिक पीड़ा को दर्शाने का प्रयास किया है। यह शोध समस्या उन्मुख अध्ययन के लिए उपयोगी है।
3. मनौबी बंद्योपाध्याय (2018) ''पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन'' यह कृति ट्रांसजेंडर समुदाय के भीतर संघर्ष के माध्यम से सशक्तिकरण और अस्तित्व की यात्रा को प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक यह प्रमाणित करती है कि ट्रांसजेंडर व्यक्तिओ के जीवन में शिक्षा के से ही सकारात्मक परिवर्तन आना संभव है।
4. शिव प्रसाद (2016) ''किन्नर एक सामाजिक अध्ययन'' प्रस्तुत अध्ययन में ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति भेदभाव और सामाजिक बहिष्करण के रूपों को दर्शाया है। अपने वर्तमान समय में ट्रांसजेंडर समुदाय की उनकी सामाजिक पहचान, आजीविका तथा समाज में उनके संघर्ष को समझाने का प्रयास किया है।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले के केमरी और बिलासपुर शहर के 40 ट्रांसजेंडर उत्तरदाताओ पर आधारित है। इस शोध पत्र में एकत्रित प्राथमिक आकड़े साक्षात्कार अनुसूची द्वारा संकलित किये गए है जबकि द्वितीयक तथ्य शोध पत्र तथा पुस्तकों के माध्यम से प्राप्त किये है।

उद्देश्य

1. ट्रांसजेंडर समुदाय को शिक्षा के अधिकार से वंचित कारणों का विश्लेषण करना।
2. समाज द्वारा ट्रांसजेंडर समुदाय के प्रति अपनाए गए व्यवहार और सोच को समझना।
3. ट्रांसजेंडर समुदाय की शिक्षा और रोजगार अवसरों में आने वाली बाधाओं का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ

1. सामाजिक भेदभाव के कारण ट्रांसजेंडर समुदाय के जीवन पर नकरात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. ट्रांसजेंडर व्यक्तियो के प्रति जागरूकता की कमी सामाजिक बहिष्करण को बढावा देती है।
3. अशिक्षित होने के कारण जीवन स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.038

ट्रांसजेंडर समुदाय की शेक्षिक स्थिति

तालिका संख्या –01

शिक्षा स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
अशिक्षित	15	37%
प्राथमिक शिक्षा	10	25%
माध्यमिक शिक्षा	10	25%
उच्च शिक्षा	5	12.5%
योग	40	100.00

व्याख्याः उपरोक्त तालिका संख्या 01 से स्पष्ट है कि अधिकांश 37% उत्तरदाता अशिक्षित है। सबसे कम संख्या उच्च शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं की है। इससे स्पष्ट होता कि वर्तमान में अधिकांश ट्रांसजेंडर अभी भी अशिक्षित है।

तालिका संख्या –02

परिवार द्वारा स्वीकृति का स्तर

पारिवारिक स्वीकृति	संख्या	प्रतिशत
पूर्ण स्वीकृति	10	25%
आंशिक स्वीकृति	14	35%
अस्वीकृति	16	14%
योग	40	100.00

व्याख्याः प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है, ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को 25% पारिवारिक स्वीकृति प्राप्त हुई है। वही 14 उत्तरदाताओ को परिवार से आंशिक स्वीकृति प्राप्त हुई है, जबकि 16 उत्तरदाताओं को परिवार से पूर्ण स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई। वर्तमान समय भी में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को पारिवारिक स्वीकृति का अभाव रहता है।

तालिका संख्या –03

समाज का व्यवहार

समाज का व्यवहार	संख्या	प्रतिशत
सकारात्मक	9	22.5%
सामान्य	17	42%
नकारात्मक	14	35%
योग	40	100.00

व्याख्याः तालिका संख्या 3 से स्पष्ट होता है कि 9% ट्रांसजेंडर उत्तरदाताओ ने समाज के व्यवहार को सकारात्मक बताया कुछ उत्तरदाताओ ने समाजिक व्यवहार को समान्य और कुछ उत्तरदाताओ से नकारात्मक पहलु भी पर्याप्त मात्रा में पाए गए।

तालिका संख्या –04

शिक्षा प्राप्ति में बाधाएँ

प्रमुख बाधा	संख्या	प्रतिशत
आर्थिक समस्या	8	0.2%
सामाजिक भेदभाव	15	32.5%
पारिवारिक सहयोग की कमी	8	22%
अन्य कारण	9	22.5%
योग	40	100.00

व्याख्याः तालिका संख्या 4 शिक्षा प्राप्ति में बाधाओं को दर्शाती है। ट्रांसजेंडर उत्तरदाताओ 32.5% शिक्षा प्राप्ति में बड़ी बाधा पाई गयी है। इसके पारिवारिक सहयोग की कमी और आर्थिक समस्या भी महत्वपूर्ण बाधाये है। सामाजिक भेदभाव शिक्षा प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा के रूप में सामने आया।

तालिका संख्या –05

रोजगार की स्थिति

रोजगार स्थिति	संख्या	प्रतिशत
नियमित रोजगार	8	20%
अस्थायी कार्य	19	47.5%
बेरोजगार	13	32.5%
योग	40	100.00

व्याख्याः तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश 47.5% ट्रांसजेंडर उत्तरदाता अस्थायी कार्यो पर निर्भर है। जिसमे 20% ट्रांसजेंडर व्यक्तियों का नियमित रोजगार है, जबकि 32.5% बेरोजगार की स्थिति को दर्शाते है। इससे स्पष्ट होता है कि ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के जीवन में अभी भी रोजगार समस्या बनी रहती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्ययन के आधार पर यह समझा जा सकता है कि ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति समाज का दृष्टिकोण अभी पूरी तरह सकारात्मक नहीं बन पाया है तथा एकत्रित आकड़ो से यह स्पष्ट हुआ है कि ट्रांसजेंडर समुदाय के कई सदस्यों के पास आधार कार्ड जैसे वैध पहचान, दस्तावेज नहीं है। जिसके कारण सरकारी योजनाओं और सामाजिक सुरक्षा जैसे कार्यकर्मो के लाभ से वंचित रह जाते है। यही स्थिति सामाजिक बहिष्करण को गहरा करती है जो उनको सामाजिक मुख्यधारा से अलग करती है। ट्रांसजेंडर समुदाय की स्थिति सामाजिक, शैक्षिक तथा आर्थिक दृष्टि से अभी भी संतोषजनक नहीं है। उनकी शैक्षिक स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर पाई गई, जिसके पीछे सामाजिक उपेक्षा, आर्थिक अभाव तथा सहयोगी वातावरण की कमी प्रमुख कारण हैं। परिवार के स्वीकृति स्तर का विश्लेषण दर्शाता है कि अधिकांश ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को अपने परिवार से पूर्ण समर्थन नहीं मिल पाता, जिससे वे भावनात्मक असुरक्षा एवं सामाजिक अलगाव का अनुभव करते हैं। समाज का व्यवहार भी उनके प्रति समानतापूर्ण नहीं है। भेदभाव, उपहास एवं अस्वीकारात्मक दृष्टिकोण उनके व्यक्तित्व विकास और सामाजिक सहभागिता को प्रभावित करता है। शिक्षा प्राप्ति में बाधाओं के रूप में विद्यालय में परिवेश में असुरक्षा, भेदभावपूर्ण व्यवहार, तथा उपयुक्त नीतियों एवं सुविधाओं की कमी सामने आती

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.038

है, जो उनकी शिक्षा को अधूरी छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं। इसी प्रकार, रोजगार की स्थिति भी सीमित अवसरों से घिरी हुई है। योग्यता होने के बावजूद सामाजिक पूर्वाग्रहों के कारण उन्हें स्थायी एवं सम्मानजनक रोजगार प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अतः यह कहा जा सकता है कि ट्रांसजेंडर समुदाय के समग्र उत्थान के लिए परिवार, समाज और सरकार – तीनों स्तरों पर संवेदनशीलता, समान अवसर और समावेशी नीतियों को बढ़ावा देना आवश्यक है। सामाजिक परंपराएँ, रूढ़ सोच और जानकारी की कमी के कारण उन्हें कई बार भेदभाव और अस्वीकार्यता का सामना करना पड़ता है। फिर भी शिक्षा के प्रसार, जागरूकता और कानूनी अधिकारों के कारण समाज की सोच में धीरे–धीरे बदलाव दिखाई दे रहा है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि जहाँ लोगों में समझ और संवेदनशीलता अधिक होती है, वहाँ ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को अपेक्षाकृत अधिक सम्मान और स्वीकार्यता मिलती है। इसलिए आवश्यक है कि समाज में जागरूकता बढ़ाई जाए, समान व्यवहार को प्रोत्साहित किया जाए। ताकि ट्रांसजेंडर समुदाय भी सम्मानपूर्वक और आत्मविश्वास के साथ जीवन व्यतीत कर सके। अतः यह आवश्यक है कि समाज में समावेशी शिक्षा, सामाजिक जागरूकता और समान अवसरों के माध्यम से ही ट्रांसजेंडर समुदाय को समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाया जा सकता है तभी एक अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण संभव हो सकेगा।

ट्रांसजेंडर की स्थिति को सुधारने के लिए कुछ सुझाव अपेक्षित है

1. ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति समाज का सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने के लिए व्यापक स्तर पर सामाजिक जागरूकता और शिक्षा को विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।
2. शैक्षणिक संस्थानों में समावेशी वातावरण सुनिश्चित करते हुए लैंगिक समानता से संबंधित शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।
3. प्रारम्भिक स्तर से ही विद्यार्थियों में सम्मान और स्वीकार्यता की भावना विकसित हो सके।
4. ट्रांसजेंडर समुदाय को शिक्षा, कौशल विकास तथा रोजगार के समान अवसर उपलब्ध कराये जाये। जो उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण है।
5. मीडिया और सामाजिक संस्थाओं को भी उनकी वास्तविक और सम्मानजनक पहचान प्रस्तुत करने की दिशा में सकरात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त, सरकारी योजनाओं और कानूनी अधिकारों की जानकारी सरल रूप में समुदाय तक पहुँचाना तथा उनके प्रभावी पहलुओ को सुनिश्चित करना आवश्यक है, जिससे ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को समाज की मुख्यधारा में सम्मानपूर्वक स्थान प्राप्त हो सके। Act,2019 को सही तरीके से लागु किया जाये ताकि उनके अधिकारों की रक्षा हो सके। परिवारों को जागरूक किया जाये ताकि वे ट्रांसजेंडर बच्चो को अपनाए और उनको परिवार का समर्थन मिल सके। ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था आवश्यक कराई जाये। जो सुरक्षित, सम्मानजनक और भेदभाव–रहित हो।

सन्दर्भ

1. दत्त लवलेश (2023) ट्रासजेंडर दर्द की दास्तानःकानपुर विकास प्रकाशन।
2. चौधरी, एन. (2022). भारतीय समाज में तीसरा लिंग. नई दिल्लीः राधा पब्लिकेशन।

3. यादव, के. (2021). ट्रांसजेंडर अधिकार और सामाजिक न्याय. नई दिल्लीः ओरिएंट ब्लैकस्वान।
4. गुप्ता, एम. (2020). लैंगिक विविधता और भारतीय समाज. नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशन इंडिया।
5. सिंह, वी. (2019). ट्रांसजेंडर विमर्श और समाज, जयपुर अयन प्रकाशन।
6. बंद्योपाध्याय मनौबी (2018) पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
7. शुक्ला, आर. (2018). किन्नर समाजः पहचान और संघर्ष. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।
8. मिश्रा, आर. (2018). लैंगिक पहचान और समावेशी समाज. नई दिल्लीः ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।
9. शर्मा, पी. (2017). तीसरे लिंग की सामाजिक स्थिति. जयपुरः रावत पब्लिकेशन।
10. त्रिपाठी, लक्ष्मी नारायण. (2015). मैं हिजड़ा, मैं लक्ष्मी. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
11. प्रसाद शिव (2016) किन्नर एक सामाजिक अध्ययन. नई दिल्लीः रावत पब्लिकेशन।
12. सुमन रामलाल (2014) तीसरी दुनिया रू किन्नर समाज नई दिल्लीः भावना प्रकाशन।